

Priti Singh
Assistant Professor
DEPARTMENT OF B.Ed.
THE GRADUATE SCHOOL COLLEGE FOR WOMEN,
JAMSHEDPUR

B.Ed. - 2nd Sem, Paper- VII A, (Pedagogy of Social Science –Geography)

भूगोल का विकास

Development of Geography (part -2)

1400 से 1600 AD) के दौरान यूरोप में विभिन्न राष्ट्र राज्यों द्वारा भौगोलिक अन्वेषण की कई यात्राएं शुरू की गईं। इन यात्राओं में अधिकांश संसाधन दोहन से संभावित वाणिज्यिक रिटर्न के कारण वित्त पोषित किया गया। यात्राओं ने वैज्ञानिक जांच और खोज के लिए एक अवसर भी प्रदान किया। इन यात्राओं ने भौगोलिक ज्ञान में कई महत्वपूर्ण योगदान भी जोड़े। इस अवधि के महत्वपूर्ण खोजकर्ताओं में शामिल हैं क्रिस्टोफर कोलंबस, वास्को-दा-गामा, फर्डिनेंड मैगलन, जैक्स कार्टियर, फ्रांसिस ड्रेक, जॉन कैबोट और सेबेस्टियन कैबोट पुनर्जागरण के दौरान भी, 1492 में पृथ्वी को अपने वास्तविक त्रि-आयामी रूप में चित्रित करने वाली एक गोलाकार ग्लोब बनाया गया था। बेहेम का आविष्कार दो आयामी मानचित्रों पर एक महत्वपूर्ण अग्रिम था क्योंकि इसने पृथ्वी के आकार और सतह विन्यास का अधिक यथार्थवादी चित्रण बनाया था।

During the (1400 to 1600 AD) numerous journeys of geographical exploration were commissioned by a variety of nation states in Europe. Most of these voyages were financed because of the potential commercial returns from resource exploitation. The voyages also provided an opportunity for scientific investigation and

discovery. These voyages also added many significant contributions to geographic knowledge. Important explorers of this period include **Christopher Columbus, Vasco -da -Gama. Ferdinand Magellan, Jacques Cartier, Francis Drake, John Cabot and Sebastian Cabot** (explorer) and also during the Renaissance, **Martin Behaim created** a spherical globe depicting the Earth in its true three-dimensional form in 1492. Behaim's invention was a significant advance over two-dimensional maps because it created a more realistic depiction of the Earth's shape and surface configuration.

17 वीं शताब्दी में वेरेनियस (1622-1650) ने **Geographia generalis (सामान्य भूगोल: 1650)** शीर्षक से एक महत्वपूर्ण भौगोलिक संदर्भ प्रकाशित किया। इस मात्रा में, वेरेनियस ने भौगोलिक ज्ञान से संबंधित कुछ नए विचारों को प्रस्तुत करने के लिए प्रत्यक्ष टिप्पणियों और प्राथमिक मापों का उपयोग किया। यह काम लगभग 100 वर्षों तक एक मानक भौगोलिक संदर्भ बना रहा। 17 वीं शताब्दी में वेरेनियस (1622-1650) ने भूगोल सामान्य (सामान्य भूगोल: 1650) शीर्षक से एक महत्वपूर्ण भौगोलिक संदर्भ प्रकाशित किया। इस मात्रा में, वेरेनियस ने भौगोलिक ज्ञान से संबंधित कुछ नए विचारों को प्रस्तुत करने के लिए प्रत्यक्ष टिप्पणियों और प्राथमिक मापों का उपयोग किया। यह काम लगभग 100 वर्षों तक एक मानक भौगोलिक संदर्भ बना रहा।

In the 17th century varenius (1622-1650) published an important geographic reference titled **Geographia generalis (General Geography: 1650)**. In this volume, Varenius used direct observations and primary measurements to present some new ideas concerning geographic knowledge. This work

continued to be a standard geographic reference for about 100 years. Varenus also suggested that the discipline of geography could be subdivided into three distinct branches.

पहली शाखा पृथ्वी के रूप और आयामों की जांच करती है। दूसरा उप-अनुशासन ज्वार, समय और स्थान के साथ जलवायु विविधताओं, और अन्य चरों से संबंधित है जो सूर्य और चंद्रमा के चक्रीय आंदोलनों से प्रभावित हैं। एक साथ इन दोनों शाखाओं क्या हम सामूहिक रूप से अब भौतिक भूगोल फोन की प्रारंभिक शुरुआत के रूप में । भूगोल की अंतिम शाखा ने तुलनात्मक सांस्कृतिक अध्ययनों का उपयोग करते हुए पृथ्वी पर विशिष्ट क्षेत्रों की जांच की। आज ज्ञान के इस क्षेत्र को सांस्कृतिक भूगोल कहा जाता है।

The first branch examines the form and dimensions of the Earth. The second sub-discipline deals with tides, climatic variations over time and space, and other variables that are influenced by the cyclical movements of the Sun and moon. Together these two branches form the early beginning of what we collectively now call physical geography. The last branch of geography examined distinct regions on the Earth using comparative cultural studies. Today, this area of knowledge is called cultural geography.

18 वीं शताब्दी के दौरान, जर्मन दार्शनिक **Immanuel Kant (1724-1804)** ने प्रस्ताव किया कि मानव ज्ञान को तीन अलग-अलग तरीकों से आयोजित किया जा सकता है। ज्ञान के आयोजन का एक तरीका अध्ययन की गई वस्तुओं के प्रकार के अनुसार अपने तथ्यों को वर्गीकृत करना था। तदनुसार,

जूलॉजी जानवरों का अध्ययन करता है, वनस्पति विज्ञान पौधों की जांच करता है, और भूविज्ञान में चट्टानों की जांच शामिल है। दूसरा तरीका एक चीजों का अध्ययन कर सकते हैं एक लौकिक आयाम के अनुसार है । ज्ञान का यह क्षेत्र निश्चित रूप से इतिहास कहा जाता है । ज्ञान के आयोजन की अंतिम विधि में स्थानिक संबंधों के सापेक्ष तथ्यों को समझना शामिल है। ज्ञान के इस क्षेत्र को आमतौर पर भूगोल के रूप में जाना जाता है। कांत ने भूगोल को कई उप-विषयों में भी बांटा। उन्होंने निम्नलिखित छह शाखाओं को मान्यता दी: भौतिक, गणितीय, नैतिक, राजनीतिक, वाणिज्यिक और धार्मिक भूगोल।

During the 18th century, the German philosopher **Immanuel Kant (1724-1804)** proposed that human knowledge could be organized in three different ways. One way of organizing knowledge was to classify its facts according to the type of objects studied. Accordingly, zoology studies animals, botany examines plants, and geology involves the investigation of rocks. The second way one can study things is according to a temporal dimension. This field of knowledge is of course called history. The last method of organizing knowledge involves understanding facts relative to spatial relationships. This field of knowledge is commonly known as geography. **Kant also divided geography into a number of sub-disciplines. He recognized the following six branches: Physical, mathematical, moral, political, commercial, and theological geography.**

भौगोलिक ज्ञान 1800 के दशक में यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में मजबूत विकास देखा । इस अवधि में भौगोलिक मुद्दों में रुचि रखने वाले कई समाजों का उद्भव भी देखा गया। जर्मनी में, अलेक्जेंडर वॉन हम्बोल्ट कार्ल रिटर और रटज़ेल ने मानव और भौतिक भूगोल में पर्याप्त योगदान दिया। **हम्बोल्ट का प्रकाशन कोस्मोस (1844)** पृथ्वी के भूविज्ञान और भौतिक भूगोल की जांच करता है। इस काम को कई शिक्षाविदों द्वारा भौगोलिक छात्रवृत्ति में मील का पत्थर योगदान माना जाता है । 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, **रैटज़ेल** ने सिद्धांत दिया कि पृथ्वी की विभिन्न मानव आबादी का वितरण और संस्कृति प्राकृतिक पर्यावरण से दृढ़ता से प्रभावित थी।

Geographic knowledge saw strong growth in Europe and the United States in the 1800s. This period also saw the emergence of a number of societies interested in geographic issues. In Germany, Alexander von Humboldt Carl Ritter and Ratzel made substantial contributions to human and physical geography. **Humboldt's publication Kosmos (1844)** examines the geology and physical geography of the Earth. This work is considered by many academics to be a milestone contribution to geographic scholarship. Late in the 19th Century, **Ratzel** theorized that the distribution and culture of the Earth's various human populations was strongly influenced by the natural environment.
